बदलावों की बयार

आज की शिक्षा कल की सफलता का सूचक है। बच्चों में रोपित शिक्षा का बीज आने वाले कल में फलदार वृक्ष बनेगा। सामाजिक आन्दोलनों को वक्त के हिसाब से बदलना होगा और समाज में आ रहे बदलावों को महसूस करना होगा। इसके लिए सामाजिक परिवेश, सामाजिक सुरक्षा और शिक्षा के सिस्टम में बदलाव लाने होंगे। मेजिरिंग व्हाट मैटर्स सत्र में सोशल एन्टरप्रिन्योरशिप विषय पर आयोजित परिचर्चा में वक्ताओं ने यही विचार जाहिर किए। इसमें वरिष्ठ उद्यमी और अशोक इंडिया के संचालक विष्णु स्वामीनाथन, अमर माजूली की संस्थापक निदेशक गिली नेवोन, कट्स इंटरनेशनल के प्रदीप मेहता ने हिस्सा लिया। वार्ताकार रश्मि नायक रहीं। सभी वक्ताओं ने सामाजिक उद्यमशीलता के लिए बदलाव को बड़ा कारक बताया और वर्तमान में चल रहे आन्दोलनों को

दोपहर 12.45 से 1.30 तक चले सत्र 'मेजरिंग व्हाट मैटर्स' में विष्णु स्वामीनाथन, गिली नेवॉन, प्रदीप मेहता ने भाग लिया। वार्ताकार रहीं रश्मि नाइक।

बदलाव की बयार से अछूता कहा। स्वामीनाथन ने कहा कि आज का दौर बदलाव का है। हर व्यक्ति चेंज मेकर बन गया है। आश्चर्य की बात यह है कि ये चेंज मेकर कोई तकनीकी डिग्री होल्डर नहीं हैं, बल्कि बच्चा-बच्चा इसमें शामिल है। सबकी लाइफ स्टाइल बदल गई है। कम्पनियां अपने पुराने उत्पादों को भूल बदलाव की भूमिका में हैं और नए उत्पाद पेश कर रही हैं। हमारा शिक्षा का ढांचा ही बदल गया है।

कट्स के जरिए उपभोक्ता आन्दोलनों से जुड़े वरिष्ठ विशेषज्ञ प्रदीप मेहता ने कहा कि सामाजिक परिवेश में लोगों को आने वाली समस्याओं से ही सामाजिक उद्यमशीलता का जन्म होता है। लोग कष्ट में हैं, लोगों की समस्याएं हैं। इन समस्याओं से जो प्रभाव उत्पन्न हो रहे हैं, उससे लड़ने का नाम ही सामाजिक उद्यमशीलता है। शिक्षा की इसमें प्रमुख भूमिका है।

इजराइल की गिली नेवोन ने असम की ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे स्थित गांव अमर माजूली के जरिए महिलाओं की उद्यमशीलता के बारे में बताया। उन्होंने डॉक्यूमेन्ट्री के जरिए बताया कि यह गांव महिला उद्यमशीलता की मिसाल है। गांव बाढ़ से कई बार उजड़ चुका है, पर मेहनतकश महिलाओं ने समृद्धि की लकीर खींच दी। यहां साइकिल बैंक बनाया जा चुका है, जिसमें महिलाएं लोन लेकर साइकिल खरीदती हैं और गांव का विकास कर रही हैं।

सामाजिक उद्यमिता पर केन्द्रित सत्र में विष्णु स्वामीनाथन, प्रदीप मेहता, गिली नेवॉन और रश्मि नाइक इस क्षेत्र की समस्याओं और जरूरतों पर चर्चा करते हुए।